भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओ के अन्तर्गत

रामलीला की प्रोग्रेस रिपोर्ट

मूक बधिर बच्चों द्वारा रामलीला का अभिनव प्रयोग 17 मार्च 2016 को मर्चेन्ट चेम्बर हाल प्रेक्षागार में किया गया उपरोक्त रामलीला में 70 दिव्यांग मूक बधिरों ने अपनी प्रतिभा एवं कला के द्वारा संक्षिप्त रामलीला को माइम, साइन लैग्वैज, लिप रीडींग एवं अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया गया। यह प्रयोग सम्भवतः देश ही नही दुनियां के लिये एक नया प्रयोग था।

कला सागर नाटक समिति कानपुर भारत की सर्वाधिक प्राचीन कला को बनाये रखने में हमेशा से ही 1986 से निरन्तर कार्यरत है वैसे तो रामलीला भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिवर्ष एक पर्व के रूप में मनायी जाती है परन्तु कला सागर नाटक समिति हमेशा से नये प्रयोग विविधता एवं जन सामान्य एवं दिव्यांग बच्चों को जोड कर भारत की प्राचीन संस्कृति व विरासत की जडों को मजबूती प्रदान करने में हमेशा से तत्पर रही है। इसी श्रंखला में कला सागर नाटक समिति दिव्यांग विद्यालय के साथ सम्बद्ध होकर मूक बधिर बच्चों को छः महीने की ट्रेनिंग देकर उनके द्वारा सम्पूर्ण रामलीला को 17 मार्च 2016 को सम्पन्न करायी गयी चूँकि रामलीला हमारी प्राचीन संस्कृति है जिससे समाज का कोई भी वर्ग इस कला से वंचित न रह सके।इसके साथ साथ मूक बधिर दिव्यांग बच्चों द्वारा रामलीला का आयोजन अपने आप में एक अभिनव प्रयास एवं विशिष्टता लिये हुये रहा एवं इसके द्वारा जनमानस एवं दिव्यांग बच्चों को अपनी संस्कृति रामायण आदि का ज्ञान खेल खेल में हुआ। चूँकि मेरे पूर्व अनुभव में इन बच्चों से माइम कला करवायी एवं अन्य रंगमंची कार्यक्रम इन बच्चों ने दिये वह सिद्ध करता है कि इन बच्चों में प्रतिभा एवं सृजनात्मकता एवं विषिश्टता समाज के अन्य वर्गो से किचिंत मात्र भी कम नही है। इस प्रदर्शन से भारत की संस्कृति

संस्थापक/सचिव
कला सागर नाटक समिति
108/12, पी० रोड, गांधी नगर, कानपुर

को सुदृढ़ता प्रदान करने में सफलता प्राप्त हुई, साथ ही साथ मूक बधिर दिव्यांग बच्चों में एवं जनसामान्य में भारतीय संस्कृति का ज्ञान व उन दिव्यांग बच्चों के अन्दर छिपी अभिनय प्रतिभा एवं रामलीला के प्रति अति सम्मानीय दृष्टि कोण को उजागर करने में महती भूमिका का निर्माण हुआ।

S. S. Mishra

संस्थापक/सचिव

कला सागर नाटक समिति

108/12, पी० रोड, गांधी नगर, कानपुर

इतिहास

समुद्र से लेकर हिमाचल तक प्रख्यात रामलीला का आदि प्रवर्तक कौन है, यह विवादास्पद प्रश्न है। भावुक भक्तों की दृष्टि में यह अनादि है। एक किंवदंति का संकेत है कि त्रेता युग में श्री रामचंद्र के वनगमनोपरांत अयोध्यावासियों ने चौदह वर्ष की वियोगावधि राम की बाल लीलाओं का अभिनय कर बिताई थी। तभी से इसकी परंपरा का प्रचलन हुआ। एक अन्य जनश्रुति से यह प्रमाणित होता है। कि इसके आदि प्रवर्तक मेघा भगत थे जो काशी के कतुआपुर महल्ले में स्थित फुटहे हनुमान के निकट के निवासी माने जाते हैं। एक बार पुरुषोत्तम रामचंद्र जी ने इन्हें स्वप्न में दर्शन देकर लीला करने का आदेश दिया ताकि भक्त जनों को भगवान के चाक्षुष दर्शन हो सकें। इससे सत्प्रेरणा पाकर इन्होंने रामलीला संपन्न कराई। तत्परिणामस्वरूप ठीक भरत मिलाप के मंगल अवसर पर आराध्य देव ने अपनी झलक देकर इनकी कामना पूर्ण की। कुछ लोगों के मतानुसार रामलीला की अभिनय परंपरा के प्रतिष्ठापक गोस्वामी तुलसीदास हैं, इन्होंने हिंदी में जन मनोरंजनकारी नाटकों का अभाव पाकर इसका श्रीगणेश किया। इनकी प्रेरणा से अयोध्या और काशी के तुलसी घाट पर प्रथम बार रामलीला हुई थी।

रामलीला के प्रकार

रंगमंचीय दृष्टि से रामलीला तीन प्रकार की हैं - सचल लीला, अचल लीला तथा स्टेज़ लीला। काशी नगरी के चार स्थानों में अचल लीलाएँ होती हैं। गो. तुलसीदास द्वारा स्थापित रंगमंच की कई विशेषताओं में से एक यह भी है कि स्वाभाविकता, प्रभावोत्पादकता और मनोहरता की सृष्टि के लिए, अयोध्या, जनकपुर, चित्रकूट, लंका आदि अलग-अलग स्थान बना दिए गए थे और एक स्थान पर उसी से संबंधित सब लीलाएँ दिखाई जाती थीं। यह ज्ञातव्य है कि रंगशाला खुली होती थी और पात्रों को संवाद जोड़ने घटाने में स्वतंत्रता थी। इस तरह हिंदी रंगमंच की प्रतिष्ठा का श्रेय गो. तुलसीदास को और इनके कार्यक्षेत्र काशी को प्राप्त है।

S.S. mishra.
10/5/2017.
संस्थापक/सचिव
... सागर नाटक समिति
108/12, पी० रोड गाँधी नगर, कानपुर

कला सागर नाटक समिति, कानपुर

की प्रस्तुति

राम लीला

(दिव्यांग (मूक बधिर) बच्चो द्वारा मंचित)

पटकथा/आवाज़-
शिव शरण मिश्र

निर्देशक - अचिन गोस्वामी
(जोगेश दत्ता, माइम अकादमी, कलकत्ता)
सहायक निर्देशक - डा0 भावना मिश्रा
मनप्रीत कौर कालरा

17 मार्च 2016 (गुरुवार) शाम 7:30 बजे

मर्चेन्ट चेम्बर हॉल, सिविल लाइन्स, कानपुर

: विशेष सहयोग :

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण की योजना के तहत- संगीत नाटक अकादमी दिल्ली संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।

गूँगें बहरो का विद्यालय, साकेत नगर, गाँधी नगर, कानपुर

मुख्य अतिथि : श्री इन्द्र मोहन रोहतगी

अध्यक्षता : राजीव शर्मा
(अपर आयुक्त कानपुर मण्डल, कानपुर)

विशिष्ट अतिथि :
अरुन भाटिया
(एम. डी.)
(टेक्नो फार्मा प्रा. लि. कानपुर)

शिव शरण मिश्र
संस्थापक/सचिव
मो0- 9839119719, 9839226719

सृजन मिश्रा/प्रतिभा शुक्ला/संगीता

राम सुखी मिश्रा
अध्यक्ष

एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छ भारत — निर्मल भारत

यह कार्ड केवल दो व्यक्तियों के लिए मान्य है। कृपया प्रारम्भ से रामलीला देखें।

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओ के अन्तर्गत

रामलीला की प्रोग्रेस रिपोर्ट

मूक बधिर बच्चों द्वारा रामलीला का अभिनव प्रयोग 17 मार्च 2016 को मर्चेन्ट चेम्बर हाल प्रेक्षागार में किया गया उपरोक्त रामलीला में 70 दिव्यांग मूक बधिरों ने अपनी प्रतिभा एवं कला के द्वारा संक्षिप्त रामलीला को माइम, साइन लैग्वैज, लिप रीडींग एवं अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया गया। यह प्रयोग सम्भवतः देश ही नही दुनियां के लिये एक नया प्रयोग था।

कला सागर नाटक समिति कानपुर भारत की सर्वाधिक प्राचीन कला को बनाये रखने में हमेशा से ही 1986 से निरन्तर कार्यरत है वैसे तो रामलीला भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिवर्ष एक पर्व के रूप में मनायी जाती है परन्तु कला सागर नाटक समिति हमेशा से नये प्रयोग विविधता एवं जन सामान्य एवं दिव्यांग बच्चों को जोड कर भारत की प्राचीन संस्कृति व विरासत की जडों को मजबूती प्रदान करने में हमेशा से तत्पर रही है। इसी श्रंखला में कला सागर नाटक समिति दिव्यांग विद्यालय के साथ सम्बद्ध होकर मूक बधिर बच्चों को छः महीने की ट्रेनिंग देकर उनके द्वारा सम्पूर्ण रामलीला को 17 मार्च 2016 को सम्पन्न करायी गयी चूँकि रामलीला हमारी प्राचीन संस्कृति है जिससे समाज का कोई भी वर्ग इस कला से वंचित न रह सके।इसके साथ साथ मूक बधिर दिव्यांग बच्चों द्वारा रामलीला का आयोजन अपने आप में एक अभिनव प्रयास एवं विशिष्टता लिये हुये रहा एवं इसके द्वारा जनमानस एवं दिव्यांग बच्चों को अपनी संस्कृति रामायण आदि का ज्ञान खेल खेल में हुआ। चूँकि मेरे पूर्व अनुभव में इन बच्चों से माइम कला करवायी एवं अन्य रंगमंची कार्यक्रम इन बच्चों ने दिये वह सिद्ध करता है कि इन बच्चों में प्रतिभा एवं सृजनात्मकता एवं विषिश्टता समाज के अन्य वर्गो से किचिंत मात्र भी कम नही है। इस प्रदर्शन से भारत की संस्कृति

संस्थापक/सचिव
कला सागर नाटक समिति
108/12, पी० रोड, गांधी नगर, कानपुर

को सुदृढ़ता प्रदान करने में सफलता प्राप्त हुई, साथ ही साथ मूक बधिर दिव्यांग बच्चों में एवं जनसामान्य में भारतीय संस्कृति का ज्ञान व उन दिव्यांग बच्चों के अन्दर छिपी अभिनय प्रतिभा एवं रामलीला के प्रति अति सम्मानीय दृष्टि कोण को उजागर करने में महती भूमिका का निर्माण हुआ।

S. S. Mishra
संस्थापक/सचिव
बाल सागर नाटक समिति
108/12, पी० रोड, गांधी नगर, कानपुर

इतिहास

समुद्र से लेकर हिमाचल तक प्रख्यात रामलीला का आदि प्रवर्तक कौन है, यह विवादास्पद प्रश्न है। भावुक भक्तों की दृष्टि में यह अनादि है। एक किंवदंति का संकेत है कि त्रेता युग में श्री रामचंद्र के वनगमनोपरांत अयोध्यावासियों ने चौदह वर्ष की वियोगावधि राम की बाल लीलाओं का अभिनय कर बिताई थी। तभी से इसकी परंपरा का प्रचलन हुआ। एक अन्य जनश्रुति से यह प्रमाणित होता है। कि इसके आदि प्रवर्तक मेघा भगत थे जो काशी के कतुआपुर महल्ले में स्थित फुटहे हनुमान के निकट के निवासी माने जाते हैं। एक बार पुरुषोत्तम रामचंद्र जी ने इन्हें स्वप्न में दर्शन देकर लीला करने का आदेश दिया ताकि भक्त जनों को भगवान के चाक्षुष दर्शन हो सकें। इससे सत्प्रेरणा पाकर इन्होंने रामलीला संपन्न कराई। तत्परिणामस्वरूप ठीक भरत मिलाप के मंगल अवसर पर आराध्य देव ने अपनी झलक देकर इनकी कामना पूर्ण की। कुछ लोगों के मतानुसार रामलीला की अभिनय परंपरा के प्रतिष्ठापक गोस्वामी तुलसीदास हैं, इन्होंने हिंदी में जन मनोरंजनकारी नाटकों का अभाव पाकर इसका श्रीगणेश किया। इनकी प्रेरणा से अयोध्या और काशी के तुलसी घाट पर प्रथम बार रामलीला हुई थी।

रामलीला के प्रकार

रंगमंचीय दृष्टि से रामलीला तीन प्रकार की हैं - सचल लीला, अचल लीला तथा स्टेज़ लीला। काशी नगरी के चार स्थानों में अचल लीलाएँ होती हैं। गो. तुलसीदास द्वारा स्थापित रंगमंच की कई विशेषताओं में से एक यह भी है कि स्वाभाविकता, प्रभावोत्पादकता और मनोहरता की सृष्टि के लिए, अयोध्या, जनकपुर, चित्रकूट, लंका आदि अलग-अलग स्थान बना दिए गए थे और एक स्थान पर उसी से संबंधित सब लीलाएँ दिखाई जाती थीं। यह ज्ञातव्य है कि रंगशाला खुली होती थी और पात्रों को संवाद जोड़ने घटाने में स्वतंत्रता थी। इस तरह हिंदी रंगमंच की प्रतिष्ठा का श्रेय गो. तुलसीदास को और इनके कार्यक्षेत्र काशी को प्राप्त है।

S.S. mishra.
10/5/2017.

संस्थापक/सचिव
[illegible] सागर नाटक समिति
108/12, पी० रोड गाँधी नगर, कानपुर

कला सागर नाटक समिति, कानपुर

की प्रस्तुति

राम लीला

(दिव्यांग (मूक बधिर) बच्चो द्वारा मंचित)

पटकथा/आवाज़-
शिव शरण मिश्र

निर्देशक - अचिन गोस्वामी
(जोगेश दत्ता, माइम अकादमी, कलकत्ता)
सहायक निर्देशक - डा0 भावना मिश्रा
मनप्रीत कौर कालरा

17 मार्च 2016 (गुरुवार) शाम 7:30 बजे

मर्चेन्ट चेम्बर हॉल, सिविल लाइन्स, कानपुर

: विशेष सहयोग :

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण की योजना के तहत- संगीत नाटक अकादमी दिल्ली संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।

गूँगें बहरो का विद्यालय, साकेत नगर, गाँधी नगर, कानपुर

मुख्य अतिथि : श्री इन्द्र मोहन रोहतगी

अध्यक्षता : राजीव शर्मा
(अपर आयुक्त कानपुर मण्डल, कानपुर)

विशिष्ट अतिथि :
अरुन भाटिया
(एम. डी.)
(टेक्नो फार्मा प्रा. लि. कानपुर)

शिव शरण मिश्र
संस्थापक/सचिव
मो0- 9839119719, 9839226719

सृजन मिश्रा/प्रतिभा शुक्ला/संगीता

राम सुखी मिश्रा
अध्यक्ष

एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छ भारत — निर्मल भारत

यह कार्ड केवल दो व्यक्तियों के लिए मान्य है। कृपया प्रारम्भ से रामलीला देखें।